# मोक्खादि-

# सेस-

# अणुयोगद्दाराणि

## ११ मोक्खाणुयोगद्दारं

महुवरमहुवरवाउलवियसियसियसुरहिगंधमल्लेहि ।
मल्लिजिणमच्चियूण य मोक्खणुयोगो परूवेमो ।।१।।

मधुको करनेवाले भ्रमरोंसे व्याकुल ऐसे विकसित, धवल और सुगन्धित पुष्पमालाओंके द्वारा मल्लि जिनेन्द्रकी पूजा करके मोक्ष-अनुयोगद्वारकी प्ररूपणा करते हैं।

--------------------------------

मोक्खो त्ति अणुयोगद्दारे मोक्खो णिक्खिवियव्वो -- णाममोक्खो ट्ठवणमोक्खो दव्वमोक्खो भावमोक्खो चेदि मोक्खो चउव्विहो। णाममोक्खो ट्ठवणमोक्खो आगमदो दव्वमोक्खो आगम-णोआगमभावमोक्खो च सुगमो। जो सो णोआगमदो दव्वमोक्खो (म प्रतिपाठोऽयम्। अ-का-ता प्रतिषु 'णोआगमदव्वमोक्खो' इति पाठः।) सो दुविहो कम्ममोक्खो णोकम्ममोक्खो चेदि। णोकम्ममोक्खो सुगमो। कम्मदव्वमोक्खो चउव्विहो पयडिमोक्खो ट्ठिदिमोक्खओ अणुभागमोक्खो पदेसमोक्खो चेदि। पयडिमोक्खो दुविहो मूलपयडिमोक्खो उत्तरपयडिमोक्खो चेदि। तत्थ एक्केक्को दुविहो देसमोक्खो सव्वमोक्खो चेदि। तत्थ अट्ठपदं -- जा पयडी णिज्जरिज्जदि अण्णपयडिं वा संकमिज्जदि एसो पयडिमोक्खो णाम। एसो पयडिमोक्खो सुगमो, पयडिउ (म प्रतिपाठोऽयम्। अ प्रतौ 'णाम सो सुगमो पयडि', ता प्रतौ 'णाम एसो सुगमो, पयडि' इति पाठः।)दय-पयडिसंकमेसु अंतब्भावादो। ठिदिमोक्खो दुविहो

उक्कस्सो जहण्णो चेदि। एत्थ अट्ठपदं। तं जहा -- ओकड्डिदा वि उक्कड्डिदा वि अण्णपयडिं संकामिदा वि अधट्ठिदीए (ता प्रतौ 'अवट्ठिदा वि' इति पाठः।) णिज्जरिदा वि ट्ठिदी ट्ठिदिमोक्खो (ता प्रतौ 'वि ट्ठिदी ए (ट्ठि)दिमोक्खो' इति पाठः।)। एदेण अट्ठपदेण उक्कस्साणुक्कस्स-जहण्णाजहण्णट्ठिदिमोक्खो परूवेयव्वो। अणुभागमोक्खे (अ-का प्रत्योः 'अणुभागमोक्खो', ता प्रतौ 'अणुभागमोक्खो (क्खे)' इति पाठः। ) अट्ठपदं। तं जहा -- ओकड्डिदो उक्कड्डिदो अण्णपयडिं संकामिदो अधट्ठिदि (अ-ता प्रत्योः 'अवट्ठिदि' इति पाठः।) गलणाए णिज्जिण्णो वा अणुभागो अणुभागमोक्खो। एदेण अट्ठपदेण उक्कस्साणुक्कस्स-जहण्णाजहण्णअणुभागमोक्खो परूवेयव्वो। पदेसमोक्खे (का प्रतौ 'पदेसमोक्खो' इति पाठः।) अट्ठपदं। तं जहा -- अधट्ठिदि (अ-ता प्रत्योः 'अवट्ठिदि' इति पाठः) गलणाए पदेसाणं णिज्जरा पदेसाणमण्णपयडीसु संकमो वा पदेसमोक्खो णाम। एसो वि उक्कस्साणुक्कस्स-जहण्णाजहण्णभेदेण णेयव्वो।

-------------------------------

मोक्ष इस अनुयोगद्वारमें मोक्षका निक्षेप करना चाहिए -- वह मोक्ष नाममोक्ष, स्थापनामोक्ष, द्रव्यमोक्ष और भावमोक्षके भेदसे चार प्रकारका है। इनमें नाममोक्ष, स्थापनामोक्ष, आगमद्रव्यमोक्ष, आगमभावमोक्ष और नोआगमभावमोक्ष; ये सुगम हैं। जो नोआगमद्रव्यमोक्ष है वह दो प्रकारका है -- कर्ममोक्ष और नोकर्ममोक्ष। इनमें नोकर्ममोक्ष सुगम है। कर्मद्रव्यमोक्ष चार प्रकारका है -- प्रकृतिमोक्ष, स्थितिमोक्ष, अनुभागमोक्ष और प्रदेशमोक्ष। प्रकृतिमोक्ष दो प्रकारका है - मूलप्रकृतिमोक्ष और उत्तरप्रकृतिमोक्ष। उनमें प्रत्येक देशमोक्ष और सर्वमोक्षके भेदसे दो प्रकारका है। उनमें अर्थपद बतलाते हैं। वह इस प्रकार है -- जो प्रकृति निर्जरा को प्राप्त होती है अथवा अन्य प्रकृतिमें संक्रान्त होती है, यह प्रकृतिमोक्ष कहलाता है। यह प्रकृतिमोक्ष सुगम है, क्योंकि, उसका अन्तर्भाव प्रकृति-उदय और प्रकृतिसंक्रममें होता है। स्थितिमोक्ष उत्कृष्ट और जघन्यके भेदसे दो प्रकारका है। यहाँ अर्थपद बतलाते हैं -- अपकर्षणको प्राप्त हुई, उत्कर्षणको प्राप्त हुई, अन्य प्रकृतिमें संक्रान्त हुई और अधःस्थितिके गलनेसे निर्जराको भी प्राप्त हुई स्थितिका नाम स्थितिमोक्ष है। इस अर्थपदके आश्रयसे उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्य स्थितिमोक्षकी प्ररूपणा करना चाहिये। अनुभागमोक्षके सम्बन्धमें अर्थपदका कथन करते हैं। वह इसप्रकार है -- अपकर्षण को प्राप्त हुआ, उत्कर्षणको प्राप्त हुआ, अन्य प्रकृतिमें संक्रान्त हुआ और अधःस्थितिगलनके द्वारा निर्जराको भी प्राप्त हुए अनुभागको अनुभागमोक्ष कहा जाता है। इस अर्थपदके आश्रयसे उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्य अनुभागमोक्षकी प्ररूपणा

करना चाहिये। प्रदेशमोक्षके विषयमें अर्थपद कहते हैं। वह इस प्रकार है -- अधःस्थितिगलनके द्वारा जो प्रदेशोंकी निर्जरा और प्रदेशोंका अन्य प्रकृतियोंमें संक्रमण होता है उसे प्रदेशमोक्ष कहा जाता है। इसको भी उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्य के भेदसे ले जाना चाहिये।

-------------------------------

णोकम्मदव्वमोक्खो सुगमो। अधवा, णोआगमदो दव्वमोक्खो मोक्खो मोक्खकारणं मुत्तो चेदि तिविहो। जीव-कम्माणं वियोगो मोक्खो णाम। णाण-दंसण-चरणाणि मोक्खकारणं। सयलकम्मवज्जियो अणंतणाण-दंसण-वीरिय-चरण-सुह-सम्मत्तादिगुणगणाइण्णो णिरामओ णिरंजणो णिच्चो कयकिच्चो मुत्तो णाम। एदेसिं तिण्णं पि णिक्खेव-णय-णिरुत्तिअणुयोगद्दारेहि हेउगब्भेहि परूवणा कायव्वा। एवं कदे मोक्खाणुओगद्दारं समत्तं होदि।

-------------------------------

नोकर्मद्रव्यमोक्ष सुगम है। अथवा नोआगमद्रव्यमोक्ष मोक्ष, मोक्षकारण और मुक्तके भेदसे तीन प्रकारका है। जीव और कर्मका पृथक् होना मोक्ष कहलाता है। ज्ञान, दर्शन और चारित्र ये मोक्षकारण हैं। समस्त कर्मों से रहित; अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त वीर्य, चारित्र, सुख, सम्यक्त्व आदि गुणगणोंसे परिपूर्ण; निरामय, निरंजन, नित्य और कृतकृत्य जीवको मुक्त कहा जाता है। इन तीनोंकी ही प्ररूपणा हेतुगर्भित निक्षेप, नय और निरुक्ति अनुयोगद्वारोंसे करना चाहिये। ऐसे करनेपर मोक्ष-अनुयोगद्वार समाप्त हो जाता है।

*****

BACK